5-11-67

बाप तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम ही पढ़ते हो। फिर सतयुग में यह इम्त होगा नहीं। वहाँ तो है प्रालब्ध। बाप संगम पर आये यह नालेज सुनाते हैं। फिर तुम पद पाते लेते हो। यह पाईंट भी है बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाने का। इसलिए बच्चों को गफलत नहीं करनी चाहिए। माया गफलत बहुत कराती है। फिर समझा जाता है इनके तकदीर में नहीं है। बाप तो तदबीर कराते हैं। तकदीर में कितना फर्क पड़ जाता है। कोई पास, कोई नापास हो जाते हैं। इसलिए स्कालरशिप लेने लिए पुरुषार्थ करना पड़े। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। बाप जब फर्स्ट भी बच्चों को उठाता है। तो पहले बदलना है। वहाँ तो सब हैं बेहद के। तुम जानते हो हम ही इतना ऊँच पवित्र थे। फिर गिरते आये हैं। अब फिर पवित्र बनना है। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे सभी ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं। तो क्रिमिनल दृष्टि हो न सके। क्योंकि तुम भाई बहन ठहरे ना। यह बाप युक्ति बतलाते हैं। तुम सब बाबा बाबा कहते रहते हो। तो भाई-बहन हो गये। भगवान को सब बाबा कहते हैं। आत्माएं कहती हैं हम शिव बाबा के बच्चे हैं। फिर शरीर में हैं तो भाई बहन ठहरे। फिर हमारी क्रिमिनल आई क्यों जाये। तुम बड़े2 सभा में भी जाये सकते हो तुम तो सब भाई ठहरे हो। फिर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचना रची गई है तो भाई-बहन हो गये। और कोई सम्बन्ध नहीं। हम एक बाप के बच्चे हैं। एक बाप के बच्चे फिर हम विकार में कैसे जा सकते। भाई2 भी हैं तो भाई-बहन भी हैं। बाप ने समझाया है यह आँखें बहुत धोखा देती हैं। आँखें ही अच्छी चीज़ देखती हैं तो दिल होती है। अंधा कोई चीज़ देखेगा ही नहीं। तो तृष्णा भी उठेगी नहीं। इन आँखों को बदलना पड़ता है। भाई-बहन विकार में तो जा ही नहीं सकते। वह दृष्टि निकल जानी चाहिए। ज्ञान का तीसरा नेत्र चाहिए। आधा कल्प इन आँखों ने धोखा दिया है। अब बाप कहते हैं यह खराब दृष्टि निकले कैसे। हम आत्मा जो प्योर थी उन में कट लगी है। जितना बाप को याद करेंगे उतना बाप से लव जुटेगा। पढ़ाई से नहीं। याद से लव जुटेगा। भारत का है ही प्राचीन योग। जिससे आत्मा पवित्र बन अपने धाम चली जाती है। उन ने भाईयों को अपने बाप का परिचय दिया है। सर्वव्यापी का ज्ञान से बिल्कुल ही गिर गये हैं। अब बाप कहते हैं ड्रामा अनुसार तुम्हारा पार्ट है। राजधानी अवश्य स्थापन होनी है। जितना कल्प पहले पुरुषार्थ किया है उतना ही अब करेंगे जरूर। तुम साक्षी हो देखते रहो। यह प्रदर्शनियाँ आदि भी बहुत खुलती हैं। तुम्हारी ईश्वरीय मिशन है। यह है इनकारपोरियल गॉड फादरली मिशन। वह होती है क्रिश्चियन मिशन, बौद्धी मिशन। यह है इनकारपोरियल ईश्वरीय मिशन। निराकार तो जरूर कोई शरीर में आवेगा ना। तुम निराकारी आत्माएं मेरे साथ रहने वाले थे ना। यह ड्रामा कैसी है। किसके भी बुद्धि में नहीं है। रावण राज्य में सभी विपरीत बुद्धि बन गये हैं। अब बाप से प्रीत लगानी है। तुम्हारा इन्तजाम है हमारा तो एक दूसरा न कोई। नष्टोमोहा बनना है। यह बड़ी मेहनत है। यह जैसे फाँसी पर चढ़ना है। बाप को याद करना मानो फाँसी पर चढ़ना। शरीर छोड़ आत्मा को चला जाना है। बाप की याद बहुत जरूरी है। नहीं तो कट कैसे उतरेगी। बच्चों को अन्दर में खुशी रहनी चाहिए शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। कोई सुने तो कहेंगे यह क्या कहते हैं। क्योंकि वह तो कृष्ण को भगवान समझते हैं। एक भी मनुष्य नहीं जो समझे कि भगवान शिव को कहा जाता है। यह भी ड्रामा कैसा वन्डरफुल बना हुआ है। कृष्ण जो नम्बरवन प्रिन्स। नाम ही कृष्ण का गाया हुआ है। ल०ना० के लिए पूछो तो कह देंगे हम नहीं जानते। राधे कृष्ण ही ल० ना० बनते हैं। नाम तो इनका (ल० ना०) का होना चाहिए। परन्तु यह प्योर है फर्स्ट प्रिन्स है। इसलिए इनका नाम गायन है। श्री कृष्ण का तो पूरे 84 जन्म ही कहेंगे। ल० ना० की फिर भी 30 वर्ष कमी हो जाती है। तो इनका ही नाम डाल दिया है। पूरे 84 जन्म लेने वाले को भगवान कह देते। तुम बच्चों को बड़ी खुशी होनी चाहिए। अब हम श्री कृष्ण की राजधानी में जाते हैं। हम भी प्रिन्स-प्रिन्सेज बन सकते हैं। वह है फर्स्ट प्रिन्स। वो मथुरा में रहते हैं। बाद में जो बच्चे जन्म लेते वह तो पीछे से आते ना। जन्म तो स्वर्ग में होगा।

तुम ही स्वर्ग में प्रिन्स बन सकते हो। सब तो पहले नम्बर में नहीं आवेंगे। नम्बरवार मर्तबा पावेंगे ना। बाप कहते हैं बच्चे शुभ पुरुषार्थ करो। यहाँ तुम आये ही हो नर से नारायण बनने। त्रेता भी तख्त नारायण की है। सत्य लक्ष्मी की कथा कब नहीं सुनी होंगी। प्यार भी सब का कृष्ण पर रहता है। कृष्ण को ही झुलाते हैं। राधे को क्यों नहीं झुलाते। ड्रामा प्लैन अनुसार उनका नाम चला आता है। तुम जानते हो कि राधे है फिर भी प्यार कृष्ण से है। उनका ड्रामा में पार्ट भी ऐसा है। बच्चे हमेशा स्वभाविक प्यारे होते हैं। बाप बच्चों को देख कितना खुश होते हैं। बच्चा आवेगा तो खुश होंगे। बच्ची आवेगी तो घुटका खाते रहेंगे। या तो मार भी देते हैं। बाप समझाते हैं इस समय के बच्चे तो बिच्छू टिन्डन मिसल ही हैं। सारी दुनिया ही ऐसी है। रावण राज्य में कैरेक्टर का कितना फर्क हो जाता है। गाते भी हैं सर्व गुण सम्पन्न... हैं। हम गुणहीन हैं। बाप कहते हैं फिर से अब यह गुणवान बनो। अभी तुम समझते हो हम अनेक बार इस विश्व के मालिक बने हैं। अब फिर बनना है। क्यों नहीं बहुत खुशी होनी चाहिए। ओ हो शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। यहाँ बैठ चिन्तन करो। भगवान हमको पढ़ाते हैं। वाह रे तकदीर वाह। ऐसे2 याद करते खुश रहना तो बहुत चाहिए। वाह तकदीर वाह। बेहद का बाप हमको मिला है। हम बाबा को ही याद करते हैं। पवित्रता धारण करते हैं, दैवी गुण भी धारण करते हैं। हम यह बनते हैं। यह तो प्रैक्टीकल अनुभव की बात है। भक्ति मार्ग में तो गिरते हम एकदम किचड़े में जाकर पड़े। बाप आकर हमको किचड़े से निकालते हैं। बाप मीठे2 बच्चों को राय देते हैं चार्ट लिखो और एकान्त में जाके बैठ ऐसे2 अपने साथ बातें करो। यह बैज तो छाती से लगाये दो। भगवान की श्रीमत से हम यह बन रहे हैं। इनको ही देख चुम्बन करते रहो। बाबा की मदद से हम यह बनते हैं, बाप की याद से हम यह बनते हैं और भगवान की याद हम यह बनते हैं। बाबा आप की तो कमाल है। बाबा हमको आगे थोड़े ही पता था कि आप हमको ऐसा विश्व का मालिक बनायेंगे। यथा भक्ति में दर्शन के लिए माथा काटते, प्राण त्यागने लग पड़ते हैं तब दर्शन होता है। ऐसे 2 की ही भक्ति माला बनी हुई है। भक्तों का मान भी है। कलियुग की भक्ति तो जैसे बादशाही है। प्रिन्स प्रिन्सेज राजा आदि सब सन्यासी को माथा टेकते हैं। ऋषियों की पूजा करते हैं। क्योंकि पवित्र हैं। उनका यह पार्ट है। तुम तो बहुत सुख पाने वाले हो। तुम्हारे बेहद के बाप से प्रीत है। साकार से थोड़े ही खाते हो। जिस्मानी याद गिराये देंगे। एक बाप के सिवाय और कोई की याद न रहे। एकदम लाईन क्लियर होनी चाहिए। अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए। अब हम बाबा के फरमान पर पूरा चलेंगे। काम महाशत्रु है इन से हार न खानी है। पछता पछता कर फिर क्या करेंगे। एकदम हड्डगुड ही चूर हो जाती है। बहुत कड़ी सजा मिल जाती है। कट उतने दलदल और ही जोर से चढ़ जाती है। योग लगेगा नहीं। याद में रहना बड़ी मेहनत है। बहुत नशा भी चाहते हैं। हम तो बाबा के याद में रहते हैं। बाबा जानते हैं रह नहीं सकते। इसमें माया की बहुत कड़ी तूफान आती है। स्वप्न आदि आवेंगे एकदम तंग कर देंगे। ज्ञान तो बड़ा सहज है। छोटा बच्चा भी समझायेंगे। बाकि याद की यात्रा में ही बड़ा रोला है। खुश न होना हम सर्विस बहुत करते हैं। मुख्य सर्विस यह (याद की) करते रहो। इनको तो नशा रहता है हम शिव बाबा का अकेला बच्चा हूँ। बाबा विश्व का रचता है तो जरूर हम भी स्वर्ग का मालिक बनेंगे। प्रिन्स बनने वाला हूँ। साथ नहीं रहेंगे। अलौकिक खुशी है। परन्तु जितना तुम बच्चे याद में रहेंगे उतना हम नहीं। बाबा को तो बहुत ख्याल करनी पड़ती है। सेन्टरस पर कितने डिस्टर्ब करते हैं। कोई ईर्ष्या में आ जाते हैं। आत्माएँ हमको करती प्यार करती है हमको बस। बाबा में भी संशय ला देते। बड़े आदमियों को अलग कमरा देते हैं, खातरी करते हैं। और को कहते हैं रूठे न रहो। लूट न करो। और यह तो बाप जाने। बाप में संशय लाना बहुत नुकसान कार करते हैं। बाप तो रमजबाज है।। समझो कोई आता है जिस ने यह हाल, कमरे आदि बनाई है।